डॉ0 अंजना की कविताओं में व्यक्त अमेरिकी जीवन

सुरुचि गुप्ता
सहायक प्रवक्ता
वैश्य महाविद्यालय, भिवानी।

भारत में रहने वाला प्रत्येक व्यक्ति भारतीय कहलाता है, परन्तु अर्थोपार्जन हेतु विदेश में रहने लगे तो प्रवासी भारतीय कहलाने लगता है। भारत की सांस्कृतिक विरासत व जीवन मूल्यों को अपने अन्दर धर कर एक अपरिचित स्थान पर जीवन यापन करता है। वहाँ की दुनिया को देखता है व धीरे–2 उसी का हिस्सा बन जाता है।

डॉ0 अंजना संधीर जी अमेरिका में रहती हुई वहाँ के वातावरण को अपने अर्न्तमन में महसूस करती है। डॉ0 अंजना एक साहित्यिक, पत्रकारिताई, जनसम्पर्क एवं सूक्ष्म अवलोकन दृष्टि एवं क्षमता की विलक्षण साहित्य भार है। अतः उन्होंने अमेरिका की मिठास एवं तिक्तता को अनुभव कर लिया था। अमेरिका का यथार्थ मीठा और कड़वा दोनों स्वादों से भरा है। वहाँ के जीवन के वैभवशाली रुप, विलासिता, मनोहारी स्वच्छन्दता जहाँ एक ओर आदशलादित करने वाली है वही दूसरी ओर एक भावुक भारतीय मन को विचलित व चिंतित कर देती है।

अमेरिका में पचास राज्य हैं। लेकिन संघ एक है–युनाइटेड स्टेट ऑफ अमेरिका। हर राज्य स्वतंत्र अपनी नीति नियमों के लिए, जीवन शैली के लिए परन्तु सभी के लिए देश सर्वोपरि। सबके लिए न्याय इसका नारा है। यहाँ बचपन से ही 'मैं अमेरिका हूँ' इस बात को कूट–कूट कर भर दिया जाता है।

अमेरिका वैभव की कोई सीमा नहीं। सड़कें, कारों की संख्या, प्रकाशमान दिन रात, सभी से अमेरिकी वैभव, सभ्यता का पता चलता है।

'महानगर का एकाकीपन' में इसी वैभव को दर्शाती कवयित्री –

'धमधमाती रहती है सड़के,
कारों बसों की दौड़ से
अपनी–अपनी कारें, अपनी–अपनी दौड़।।
जलती रहती हैं चौबीसो घण्टे बत्तियाँ।
कोई किसी के रास्ते में नहीं आता।''

यहाँ खान पान की विविधता, सुविधा व सस्ता रुप भी सामने आता है।

''मूंगफली और पिस्ते का एक भाव
पैट्रोल और शराब पानी के भाव
इतना सस्ता लगता है सब्जियों से ज्यादा माँस

कि ईमान डोलने लगता है।

मँहगी घास खाने से तो अच्छा लगता है सस्ता माँस खाना।''

अमेरिकी जीवन शैली भव्य ही नहीं विलासी भी है। वस्तुतः हम भारतीय ही उसे विलास कहते हैं। इनके लिए तो यह आम व्यवहार की बात है।

'गर्म चुम्बनों से युगल वातावरण में, भरते हैं गर्माहट ...।

यहाँ स्वच्छन्दता भी एक महत्वपूर्ण पक्ष है। यह स्वच्छन्दता दायित्व की नहीं भोग की है, विलासिता की है।

'अमेरिका का सच' नामक कविता में कवयित्री ने यही स्थिति उजागर की है –

''गर्म पानी के शावर,
टेलीविजन की चैनले, सैक्स के मुक्त दृश्य
किशोरावस्था में वीकेंड में गायब रहने की स्वतंत्रता
'डिस्को की मस्ती, अपनी मनमानी का जीवन
कहीं भी, कभी भी, किसी के भी साथ
उठन बैठन की आज्ञा दी।''

अमेरिकी जीवन सुख सुविधाओं से भरा, वैयक्तिक स्वतंत्रता के अहसास से परिपूर्ण है। एक भारतीय मन जो भारतीय जीवन मूल्यों से जुड़ा है वह इसमें कितना स्थायी सुख का अनुभव करता है। भौतिक व भोगवादी जीवन एक दिन त्रासदी के रुप में प्रकट होता है। 'अब मैं डरने लगा हूँ' कविता में कवियित्री के मनोभाव इस प्रकार हैं :–

''अब मैं डरने लगा हूँ।
बच्चों का देर से लौटना,
वीकेंड में क्लब जाना, मित्रों के घर रातों रहना,
टेलीफोन पर घंटों बातें करना,
मना करने पर 911 डायल करने की धमकी देना
मेरे अनपढ़ होने, अंग्रेजी ना जानने का ताना देना
खुद कमा लेंगे कह कहीं पार्ट टाइम में लग जाना,
देसी चैनलों से चिढ़ना
धार्मिक स्थलों पर जाने से मुँह सिकोड़ना
मैं डरने लगा हूँ।''

प्रवासी भारतीय जन मानस के डर की यह स्थिति एकाएक नहीं बनती बल्कि धीरे–धीरे बनती और बढ़ती जाती है। परन्तु जागरुक व्यक्तित्व इस स्थिति के पूर्वाभास से ही सावधान हो जाते हैं और कवयित्री अन्जना संधीर अन्यों को भी सावधान करती है।

'अमेरिका हड्डियों में जम जाता है' कविता इसी पहलू पर रोशनी डालती है।

और धीरे अमेरिका स्वाद मैं बसने लगता है।
धीरे–धीरे हड्डियों में उतरने लगता है अमेरिका।
अमेरिका जब सांसों में बसने लगता है
तो अच्छा लगा, क्योंकि सांसों को पंखों की
उड़ान का अंदाजा हुआ।
और जब स्वाद में बसने लगा अमेरिका,
तो सोचो खाओ, इतना सस्ता कहाँ मिलेगा?
लेकिन अब जब हड्डियों में बसने लगा है अमेरिका
तो परेशान हूँ।
अब मैं अपने वतन जाना चाहता हूँ
मगर, इन सुखों की गुलामी तो मेरी हड्डियों में
बस गई है।
इसलिए कहता हूँ कि
तुम नए हो,
अमेरिका जब सांसों में बसने लगे
तुम उड़ने लगो, तो सात समन्दर पार,
अपनों के चेहरे याद रखना।
जब स्वाद में बसने लगे अमेरिका,
तब अपने घर के खाने और माँ की रसोई याद करना।
सुविधाओं में असुविधाएं याद रखना।
यहीं से जाग जाना .....
संस्कृति की मशाल जलाए रखना।
अमेरिका को हड्डियों में मत बसने देना।
अमेरिका सुविधाएँ देकर हड्डियों में जम जाता है।''

'अमेरिका हड्डियों में जम जाता है' कविता में अमेरिकी जीवन और भारतीय मन के यथार्थ को चौंकाने वाला चित्र है। अमेरिका को समझने के लिए ये एक पारदर्शी चित्र है। उनकी ये सभी कविताएँ हर किसी प्रवासी के हृदय को झकझोरती है। दिवा स्वप्नों में डूबे युवा वर्ग के लिए ज्ञान चक्षु का काम करती है। वे देख पाएंगे कि हर चकाचौंध कर देने वाली चमकीली वस्तु स्वर्ग नहीं होती और न ही हर भव्य समाधि में रहने वाली आत्मा प्राणवान होती है।

संदर्भ :– डॉ0 अंजना संधीर, अमेरिका एक अनोखा देश पृ0 6 –7
वहीं वहीं पृ0 75
वहीं महानगर में एकाकीपन पृ0 77–78
वहीं अमेरिका का सच पृ0 75
वहीं अब मैं डरने लगा हूँ पृ0 86
वहीं अमेरिका हड्डियों में जम जाता है पृ0 86